सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीकी अनमोल सीख (खण्ड १)

साधना प्रत्यक्ष सिखानेकी पद्धतियां

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सह-संकलनकर्ता

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

अप्रैल २०२३ तक सनातनके ३६० ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ३९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

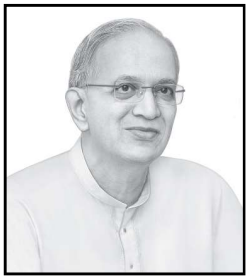

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १०.५.२०२३ तक १२४ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०९१ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

सह-संकलनकर्ता पू. संदीप आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षण फलक इत्यादि) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में बोधप्रद लेखन भी करते हैं ।

प्रस्तुत ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(अध्यायके विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

अध्याय १. सहज बातचीतसे सिखाना ११

१ इ. गुण बढानेके सन्दर्भमें सिखाना १५

१ ई. भावके सन्दर्भमें सिखाना १७

१ ओ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा सहज संवादसे साधकके मनमें हिन्दू धर्म एवं धर्माचरणके विषयमें प्रेम निर्माण करना २४

अध्याय २. अभ्यासवर्गोंके माध्यमसे सिखाना २५

२ आ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी अभ्यासवर्गमें सिखानेकी पद्धति २६

२ उ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीका जिज्ञासुओंको सूक्ष्म प्रयोग सिखाना ३०

२ ऐ. अभ्यासवर्गके जिज्ञासुओंको चरण दर चरण अनुभव हुए लाभ ३१

अध्याय ३. सत्संगोंके माध्यमसे सिखाना ३२

३ ऊ. साधनाके विषयमें प्रायोगिक स्तरपर मार्गदर्शन करना ३५

३ ऐ. संस्थाके कार्यके सन्दर्भमें विशेषतापूर्ण सूत्र बताकर साधकोंको अधिक सक्रिय एवं व्यापक करना ३८

३ ओ. साधनाके अच्छे प्रयास करनेवालोंको प्रोत्साहित करना ३९

३ ग. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी सत्संगमें मार्गदर्शन करते समयका सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्र ४४

अध्याय ४. प्रश्नोत्तरोंके माध्यमसे सिखाना ४९

४ उ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा साधकोंको उनके साधनामार्ग, रुचि अथवा प्रवृत्ति एवं क्षमताके अनुसार मार्गदर्शन करना ५२

अध्याय ५. साधकोंको अध्ययन हेतु प्रेरित कर उसके द्वारा सिखाना ५६

अध्याय ६. साधकोंको उनकी चूकें दिखाकर उनसे सिखाना ६३

६ आ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीका साधकोंको चूकें बतानेका उद्देश्य 'साधकोंकी उन्नति हो', यह होना ६४

६ उ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी साधकोंको चूकें बतानेकी पद्धतियां ६५

६ ए. परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा साधकोंको चूकोंपर उपाययोजना के रूपमें 'स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन प्रक्रिया' सिखाना ८०

६ अं. परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा पूर्व कालके सन्तोंके समान साधकोंकी कठोर परीक्षा न लेकर, उन्हें केवल साधारण चूकें ही दिखाना एवं उनसे सिखाना ८८

६ ख. परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा एक कार्यक्रमके समय साधकों से हुई चूकें बतानेपर उस समय सूक्ष्म स्तरपर हुई प्रक्रिया ८९

अध्याय ७. पत्रलेखनसे सिखाना ९२

७ आ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीने ह.भ.प. तुळशीदास पोखरकर महाराजजीको लिखा हुआ कृतज्ञतापरक पत्र ९७

अध्याय ८. सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजीके बोलनेका साधकोंको ज्ञात सूचक अर्थ १०१

ग्रन्थमाला : सच्चिदानंद परब्रह्म
डॉ. जयंत आठवलेजीकी अनमोल सीख

संयुक्त भूमिका

'समर्थ रामदासस्वामीजीने दासबोधमें कहा है –

'धर्मस्थापनेचे नर । ते ईश्वरी अवतार ।।'

(अर्थात धर्मसंस्थापना हेतु समर्पित व्यक्ति ईश्वरके ही अवतार हैं ।)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीने सनातन संस्थाकी स्थापनासे ही राष्ट्र एवं धर्म के उत्थानका महायत्न आरम्भ किया है । धर्मसंस्थापनाके कार्यमें उन्होंने स्वयंको समर्पित कर दिया है । दिनांक ५.५.२०१८ को नाडीपट्टिका वाचनके माध्यमसे महर्षि मयनने भी कहा, 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी भगवान श्रीकृष्णके ही अंशात्मक रूप हैं तथा वे धर्मसंस्थापनाके कार्यके लिए ही भूतलपर अवतरित हुए हैं !' द्वापरयुगमें श्रीकृष्णकी अमृतमय सीख गीताके रूपमें अवतरित हुई । गीताके समान ही प्रसादस्वरूप, धर्मज्ञान देनेवाली एवं अखिल मानवजातिका उद्धार करनेवाली सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी सीख इस कलियुगमें प्रस्तुत ग्रन्थमालाके रूपमें अवतरित हो रही है !

सर्वांगस्पर्शी सीख !

आजतक भारतवर्षमें सहस्रों सन्त-महात्मा हुए । अधिकांशने प्रमुख रूपसे किसी एक साधनामार्गकी शिक्षा दी है । कर्मयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग इन प्रचलित साधनामार्गोंके साथ ही चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत आदि कलाओंके माध्यमसे ईश्वरप्राप्तिकी सीख देनेवाले, साथ ही संस्कृतिपालन, समाजकार्य, राष्ट्रकार्य, धर्मजागृति, धर्मसंस्थापना अर्थात हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना, सूक्ष्म जगत जैसे सभी अंगोंके विषयमें शिक्षा देनेवाले सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी कदाचित इस कलियुगमें एकमात्र ही हैं !

साधनासम्बन्धी सुगम, प्रायोगिक एवं चैतन्यदायी सीख !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजीकी सीख समझनेमें सरल, जीवनके छोटे-बडे उदाहरणोंके माध्यमसे अध्यात्म सिखानेवाली व कृतिके स्तरपर साधना सम्बन्धी मार्गदर्शन करती है । इसलिए इसका सहजतासे आचरण किया जा सकता है । यह उच्च कोटिके सन्तका मार्गदर्शन है, अतएव चैतन्यदायी है व इसीलिए अन्तर्मनपर साधनाका संस्कार दृढ कर कृति हेतु प्रेरित भी करता है।

सन्तोंकी एक पूरी फुलवारी निर्माण करनेवाली सीख !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी अपनी उक्तियोंसे ही नहीं, कृतियोंसे भी साधकोंको सिखाकर सुन्दर-सुन्दर साधक-रत्न तैयार करते हैं । उनकी सीख आचरणमें लानेके कारण दिनांक १.५.२०२३ तक सनातनके १२४ साधक सन्त बने, जबकि १०९१ साधक सन्त बननेके मार्गपर हैं !

गुरुकी सीखसे एकरूप हो जाएं !

गुरुका स्थूल रूप है उनकी देह, परन्तु सूक्ष्म रूप है उनकी सीख ! साधक गुरुके स्थूल रूपसे नहीं, सूक्ष्म रूपसे एकरूप हो सकता है । गुरुके सूक्ष्म रूपसे, अर्थात उनकी सीखसे एकरूप हो पानेके लिए गुरुकी सीख निरन्तर आचरणमें लाना महत्त्वपूर्ण है । सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजीकी सीखका अध्ययन करते समय, वह भावके स्तरपर अपने अन्तःकरणमें भी संजोएं; जिससे समय पडनेपर उसका स्मरण होगा तथा उसका आचरण भी कर सकेंगे।

प्रार्थना !

'ज्ञानरूपी अमृतके माधुर्य एवं साधनारूपी संजीवनीके सामर्थ्यसे युक्त सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजीकी सीखका सभी आचरण करें तथा शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति करें', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !'

– पू. संदीप आळशी (३.५.२०२३)